WORLD JOURNAL OF PHARMACEUTICAL RESEARCH
SJIF Impact Factor 8.084
Volume 10, Issue 13, 427-453. Review Article ISSN 2277– 7105

MADHUMEHA: AN AYURVEDIC APPROACH A CONCISE REVIEW WITH DEFINITION, NIDANA, SAMPRAPTI, BHEDA, LAKSHANA, UPDRAV AND CHIKITSA OF MADHUMEHA

***Dr. Asheesh Gautam and M. S. (Ay) Shalya Tantra**

Assistant Professor, Shalya Tantra, Jeevak Ayurveda Medical College and Hospital Research Centre, Chandauli, UP, India.

Article Received on
21 Sep. 2021,

Revised on 11 Oct. 2021,
Accepted on 01 Nov. 2021,

DOI: 10.20959/wjpr202113-22022

***Corresponding Author**
Dr. Asheesh Gautam
Assistant Professor, Shalya Tantra, Jeevak Ayurveda Medical College and Hospital Research Centre, Chandauli, UP, India.

ABSTRACT

Madhumeha or Diabetes Mellitus is considered as one most debilitating life style disorder. Patients of diabetes mellitus not only suffer with life long drug dependency but also have high risk of development various complication like renal or neurological complications. Many patients with high blood sugar levels undergo development of fulminating diabetic ulcers and ketoacidosis etc. Even though if patient is on regular medication, doses and dependency increases with chronicityof disease. An integrative approach is needed in the field of its management to prevent complications, reduce drug dependency and improve quality of life of patient. In this article a detailed study of *Ayurvedic* texts has been done to outline the concept of *Madhumeha* explained at various *samhita*. Detailed descriptions of definitions, etiology, types, predominant symptoms with number of complications is given along with elaborated line of treatment and conservative approach withlife style modifications has been described in this article.

KEYWORDS: *Madhumeh, Prameha, Diabetes Treatment, Chikitsa.*

१. मधुमेह

मधुमेह (प्रमेह) परिचय

—अधिक मात्रा में बार—बार और प्राय: आविल (गंदले) मूत्र का त्याग ही प्रमेह कहलाता है।

–अथर्ववेद में "आश्रव" नाम से सबसे पहले उल्लेख आया है जिसका तात्पर्य है शरीरज क्लेद।

–आचार्य चरक मतानुसार **'प्रमेहोऽनुषङ्गिणाम'** अर्थात् हमेशा साथ रहने वाला तथा पुनर्भावात् अर्थात् एक बार होने पर दुबारा हो सकने वाला।

–हविश प्राशात–अर्थात् अत्यधिक घृत सेवन से प्रमेह व कुष्ठ रोग होते हैं। (च०नि०)

–दारूलभट्ट के कौशिक सूत्र में अतीसार के पर्याय रूप में उल्लेख मिलता है।

–आचार्यों ने मुख्यरूप से मूत्रवह संस्थान (वस्ति आश्रयी) रोग माना है।

आचार्य वाग्भट्ट ने २० प्रकार के मूत्राघातों का वर्णन करने के पश्चात् इन २० प्रमेहों को मूत्ररोग के रूप में वर्णित किया है। वस्तुत: मूत्र की मात्रा तथा मूत्र प्रवृत्ति से सम्बन्धित रोगों का वर्णन मूत्राघात, मूत्रकृच्छ आदि के रूप में है परन्तु मूत्र के वर्ण, गन्ध, स्पर्श आदि भौतिक गुणों से सम्बन्धित रोग प्रमेह के रूप में वर्णित है। इस प्रकार प्रमेह एक व्याधि विशेष न होकर रोगों का एक समूह है जिसमें मूत्र में अनेक कारणों से भौतिक दोष उत्पन्न हो जाते हैं।

–पुनश्च सभी प्रकार के प्रमेह प्रारम्भ में चिकित्सा न करने पर कालान्तर में मधुमेह में परिवर्तित हो जाते हैं। अत: इसी कारण से आचार्य चक्रपाणि मतानुसार–

"प्रमेहो मधुमेह शब्द वाच्या ज्ञेय:।"

अर्थात् प्रमेह शब्द से मधुमेह का ही ग्रहण कर सकते हैं।

–आयुर्वेद मतानुसार सुखी तथा आराम से रहने वाले तथा अत्यधिक मात्रा में मधुरान्न सेवन से प्रमेह रोग होता है। स्थूल प्रमेही में प्राय: अपथ्य निमित्तज तथा कृश में प्राय: सहज प्रमेह देखा जाता है। इस प्रकार के वर्णन से यह अनुमान किया जाता है कि आयुर्वेद वर्णित समस्त विवरण यथा निदान, सम्प्राप्ति चिकित्सा सिद्धान्त आदि आधुनिक दृष्टि से मधुमेह रोग का ही संकेत करता है।

२. व्युत्पत्ति

प्रमेह–प्र+मिह क्षरणे + करणेघञ

प्र उपसर्ग पूर्वक, मिह क्षरणे धातु अर्थात् क्षरणार्थक "मिह" धातु से घञ प्रत्यय करने से प्रमेह शब्द बना है जिसका तात्पर्य है प्रभूत मात्रा में विकृत मूत्र त्याग करना।

मधुमेह

१. मधु + मेह (वैद्यक शब्द सिन्धु)

"मेहेषु उच्च मधु इव मधुरं मेहति"

अत:, **"परं ततोश्च माधुर्यात् सर्वेऽपि प्रमेह, क्रमथु मेहाख्यां भवन्ति"** अर्थात् मेहो में जो उच्च है, मधु के समान मधुर मूत्र त्याग करता है वह मधुमेह है।

२. मधु + मिह (वाचस्पत्यम्)

मधु –मधुन मन उ नस्य: घ: = मन् धातु + उ प्रत्यय (न के स्थान पर घ हो जाता है)

मिह– मिह सेचने भावादि धातु से पद अनिट् प्रत्यय, अक् प्रत्यय (मेहति अभिक्षत:)

अर्थात् मधु अर्थात् मद्य/क्षौद्र/पुष्परस/जल/मधुर रस से सिंचित (समान) प्रभूत मूत्र का त्याग करना।

३. निरूक्ति व परिभाषा :

प्रमेह–**"प्रकर्षेण प्रभूतं = प्रचुरं वारंवारं वा मेहति मूत्रत्यागं करोति यस्मिन् रोगे स प्रमेह:।"** अर्थात् अत्यधिक या बार–बार और प्राय: गँदले मूत्र का त्याग ही प्रमेह कहलाता है।

मधुमेह

१. **"मधुरं यच्च मेहेषु प्रायो मध्विव मेहति**
सर्वेऽपि मधुमेहाख्या माधुर्याच्च तनोरत:।।" (अ०हृ०नि० १०/२१)
२. **"मधुक्षौद्रं तस्य तुल्यं तद्वर्ण वा मुधमेह:।।** (शा०स० ७/६२)

- अर्थात् जिस रोग में रोगी मधु के समान मूत्र का त्याग करता है और शरीर में भी माधुर्य रहता है उसे तथा इस विकार से युक्त होने पर सभी प्रमेहों को भी मधुमेह कहते हैं।
- आचार्य शारङ्गधर मतानुसार मधु या क्षौद्र के तुल्य वर्ण व गुण युक्त मूत्र त्याग ही मधुमेह है।
- **"सर्व एव प्रमेहास्तु कालेनाप्रतिकारिण:।।**
मधुमेहत्वमायान्ति तदाऽसाध्या भवन्ति हि।।" (सु.नि. ६/३०)

अर्थात् सभी प्रकार के प्रमेह क्रियाकाल (चिकित्सा का अवसर) में चिकित्सा न करने पर मधुमेह में परिवर्तित होकर असाध्य हो जाते हैं।

४. निदान :

१. **आस्यासुखं स्वप्नसुखं दधीनि ग्राम्यौदकानूपरसाः पयांसि।**
नवान्नपानं गुड़वैकृतं च प्रमेहहेतुः कफकृच्च सर्वम्। (च०चि० ६/४)

२. "दिवास्वप्नाव्यायामालस्यप्रसक्तं शीतस्निग्धमधुरमेद्यद्रवान्नपानसेविनं पुरुषं जानीयात् प्रमेही भविष्यतीति।।" (सु०नि० ६/३)

३. तत्रे में त्रयो निदानादिविशेषाः श्लेष्मनिमित्तानां प्रमेहाणामाश्वभिनिवृत्तिकरा भवन्ति। तद्यथा–हायनकयवक..... मृजाव्यायामवर्जनं स्वप्नशयनासनप्रसङ्गः यश्च कश्चिद्विधिरन्योऽपि श्लेष्ममेदोमूत्रसंजननः, स सर्वो निदानविशेषः। (च०नि० ४/५)

(१) आहारज निदान–अति दधि सेवन, ग्राम्य औदक, आनूप मांस सेवन, दुग्ध व दुग्धविकार, नवान्नपान, इक्षु व गुड़ विकार

शीत, स्निग्ध, मधुर, मेद युक्त अन्न पान का अति सेवन

नूतन हायनक, यवक, इत्कट, मुकुन्द, महाब्रीहि, प्रमोदक, सुगन्धक, अधिक घृत, नूतन मटर, माष, अरहर, चना, शाक, तिल, पलल, पिष्टान, पायस, कृशरा, विलेपी, इक्षु, चीनी, मिश्री, राब, क्षीर

नूतन मद्य, मन्दक आदि पदार्थों का अति मात्रा में बार–बार सेवन

(२) विहारज निदान–आस्या सुख (सुख पूर्वक गद्देदार आसन पर बैठे रहना) स्वप्न सुख (सुख शय्या पर अधिक सोते रहना)

दिवास्वाप (दिन में सोना), अव्यायाम (परिश्रम आदि न करना), आलस्य प्रसक्त रहना।

मृजा व्यायाम वर्जन (शरीर शुद्धि न करना, व्यायाम न करना) अति निद्रा, लेटना बैठना तथा कफ कृच्च (कफ को बढ़ाने वाले सभी कार्य) तथा श्लेष्म मेद व मूत्र का अति जनन करने वाले सभी कार्य प्रमेह के हेतु है।

पुनश्च आचार्य चरक ने सूत्र स्थान अध्याय १७ में मधुमेह विषयक विशिष्ट निदानों का वर्णन किया है–

गुरूस्निग्धाम्ललवणान्यतिमात्रं समश्नताम्।
नवमन्नं च पानं च निद्रामास्यासुखानि च
त्यक्त व्यायामचिन्तानां संशोधनमकुर्वताम्।
श्लेष्मा पित्तं च मेदेश्च मांसं चातिप्रवर्धते। (च०सू० १७/८०)
मधुमेह

आहारज निदान

गुरू स्निग्ध अम्ल लवण आदि का अति मात्रा में सेवन, नूतन अन्न और पान का सेवन।

विहारज निदान

अति निद्रा सेवन, आस्या सुख, व्यायामत्याग, अचिन्ता, यथा समय संशोधन को न करना तथा शरीर में कफ, पित्त, मेद व मांस को बढ़ाने वाले सभी कार्य मधुमेह रोग को उत्पन्न करते हैं।

सहज प्रमेह– अर्थात् बीज दोषात (पुंबीज व स्त्रीबीज में दोष से उत्पन्न)

कुलज प्रमेह–कुलज प्रवृत्ति से उत्पन्न

अपथ्य निमित्तज प्रमेह–अपथ्य आहार विहार सेवन से उत्पन्न

द्वौ पमेहौ भवत: सहजोऽपथ्यनिमित्तश्च।
तत्र सहजो मातृ पितृ बीज दोषकृत:
अहित आहारजोऽपथ्यनिमित्त:। (सु०चि० ११/३)

५. सम्प्राप्ति :

(१) सामान्य सम्प्राप्ति

(अ) सहज व कुलज प्रमेह

"जात: प्रमेही मधुमेहिनो वा न साध्य उक्त: स हि बीजदोषात्।
ये चापि केचित् कुलजा विकारा भवन्ति तांश्च प्रवदन्त्यसाध्यान्।।" (च०चि० ६/५७)

प्रमेह उत्पादक दोषों से
↓
जीव उत्पादक बीज (पुंबीज – शुक्र अथवा स्त्रीबीज–आर्तव) की दुष्टि
↓
अत: मधुमेही (प्रमेही)–माता पिता की सन्तान
↓
असाध्य स्वरूप के मधुमेह (प्रमेह) रोग से ग्रस्त

–इसी प्रकार कुलज प्रवृत्ति से उत्पन्न मधुमेह (प्रमेह) की भी उत्पत्ति व असाध्य स्वरूप होता है।

प्रमेहोऽनुषङ्गिणाम्।। (च०सू० २५/४०)

–प्रमेह रोग कुलज रोगों में सबसे प्रबलतम् होता है।

–मधुमेही रोगी की सन्तान भी मधुमेह ग्रस्त हो जाती है किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि उसमें जन्म से ही लक्षण व्यक्त हो, कतिपय में शीघ्र व कतिपय में विलम्ब से लक्षण व्यक्त होते हैं तथा कभी–कभी जीवन पर्यन्त अव्यक्त ही रह सकते हैं, ऐसा सम्भव है।

(ब) अपथ्य निमित्तज प्रमेह

१	२	३
कफ व मेद वर्धक आहार विहार ↓ वस्ति प्रदेश स्थित कफ प्रकुपित ↓ शरीरगत मेद, मांस व क्लेद (जलीयांश) की दुष्टि कर ↓ मूत्राशय में खींचकर ↓ १० प्रकार के कफज प्रमेह उत्पत्ति	उष्ण आहार विहार सेवन ↓ वस्ति प्रदेश स्थित पित्त दोष प्रकुपित ↓ शरीरगत मेद, मांस व क्लेद दुष्टि कर ↓ मूत्राशय में खींचकर ↓ ६ प्रकार के पित्तज प्रमेह उत्पत्ति	कफ व पित्त क्षोण तथा वृद्ध वायु (वात दोष) ↓ शरीर धातुओं वसा, मज्जा, ओज व लसिका की दुष्टि ↓ मूत्राशय में खींचकर ↓ ४ प्रकार के वातज प्रमेह उत्पत्ति

(२) मधुमेह विशिष्ट सम्प्राप्ति

"श्लेष्मा पित्तं च मेदश्च मांसं चातिप्रवर्धते।
तैरावृतगतिर्वायुरोज आदाय गच्छति।
यदा वस्तिं तदा कृच्छ्रा मधुमेहः प्रवर्तते।
स मारुतस्य पित्तस्य कफस्य च मुहुर्मुहुः।
दर्शयत्याकृतिं गत्वा क्षयमाप्याय्यते पुनः।।" (च०सू० १७/८०–८१)

निदान सेवन
↓
शरीर में श्लेष्मा, पित्त एवं मांस की अधिक वृद्धि
↓
वायु का मार्गावरोध
↓
प्रकुपित वायु, ओज को साथ लेकर मूत्राशय में प्रविष्ट
↓
कष्टकारी मधुमेह रोगोत्पत्ति

– **"ओज: पुनर्मधुर स्वभावं तद यदा रौक्ष्याद्वायु: कषायत्वे नाभिसंसृज्य मूत्राशयेऽभिवहति तदा मधुमेहं करोति।।"** (च०नि० ४/३७)

रूक्ष व कषाय रस युक्त वृद्ध वायु
↓
मधुर स्वभाव वाले ओज से मिलकर
↓
मूत्राशय में खींचकर
↓
मधुमेह रोगोत्पत्ति

इस प्रकार मधुमेह रोग के सम्प्राप्ति चक्र में अग्नि व ओजस् की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

श्लेष्मा तथा मेद वर्द्धक आहार विहार सेवन
↓
कफ दोष प्रकुपित
↓

श्लेष्मा, पित्त व मांस की अभिवृद्धि	मन्दाग्नि	मेदोवृद्धि
↓	↓	↓
द्रव श्लेष्मा व अबद्ध मेद सम्मूर्च्छना	आम दोष निर्माण	मेदोऽग्नि (धात्वाग्नि) मान्द्य → स्थौल्य
↓	↓	↓
मार्गावरोध	मार्गावरोध	मार्गावरोध

↓
वात दोष प्रकुपित
↓
मेद,क्लेद व ओजो दुष्टि
↓
मूत्रवह स्रोतस में ले जाकर वस्ति मुख में स्थान संश्रय
↓
ओज: क्षरण
↓
मधुमेह रोगोत्पत्ति

– **सम्प्राप्ति घटक**

दोष –द्रव श्लेष्मा प्रधान त्रिदोष

बहुद्रव: श्लेष्मा दोष विशेष: (च०नि० ४/६)
कफ: सपित्त: पवनश्च दोषा (च०चि० ६/८)
सर्व एव सर्व दोष समुत्था: (सु०नि० ६/६)

दूष्य– "बहुबद्धं मेदो मांसं शरीरजक्लेद: शुक्रं शोणितं वसा मज्जा लसीकारसश्चौज: संख्यात इति दूष्यविशेषा:।।" (च०नि० ४/७)

"कफ: सपित्त: पवनश्च दोषा मेदोऽस्रशुक्राम्बुवसा लसीका:
मज्जा रसौज: पिशितं च दूष्या: प्रमेहिणां विंशतिरेव मेहा:।।" (च०चि० ६/८)
अत: प्रमेह के १० दूष्य विशेष हैं–

अबद्ध मेद, रक्त, शुक्र, अम्बु (क्लेद), वसा, लसीका, मज्जा, रस, ओज, पिशित (मांस)।

अधिष्ठान–वस्ति (मूत्रवह संस्थान)

स्रोतस–मूत्रवह, रसवह, मेदवह

स्रोतो दुष्टि–संग (वायु मार्गावरोध) अतिप्रवृत्ति (प्रभूत आविल मूत्रता)

६. भेद :

(१) दोषानुसार व मूत्रविकार भेद से = कुल २० प्रमेह (प्रमेहिणां विंशतिरेव मेहा:)

१. कफज प्रमेह–१० प्रकार के

२. पित्तज प्रमेह– ६ प्रकार के

३. वातज प्रमेह – ४ प्रकार के

(२) हेतु भेद से

१. सहज प्रमेह

२. कुलज प्रमेह

३. अपथ्य प्रमेह

- आचार्य सुश्रुत – द्वौ प्रमेहौ भवत: सहजोऽपथ्यानिमित्तश्च

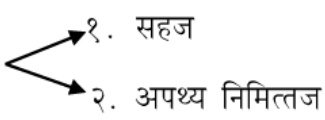

(३) देह प्रकृति भेद से (आचार्य चरक व सुश्रुत)

१. स्थूल प्रमेही (बलवान)

२. कृश प्रमेही (दुर्बल)

आचार्य वाग्भट्ट तथा माधवकर अनुसार

१. धातुक्षयजन्य प्रमेह

२. दोषावृत्त जन्य प्रमेह

आचार्य भेल

१. प्रकृतिज प्रमेह

२. स्वकृत प्रमेह

७. पूर्वरूप :

—"जटिलीभावं केशेषु, माधुर्यमास्यस्य करपादयो: सुप्ततादाहौ.....
..... विस्रं शरीरगन्धं निद्रां तन्द्रां च सर्वकालमिति।।" (च०नि० ४/४७)

—स्वदऽङ्गगन्ध: शिथिलाङ्गता च शय्यासनस्वप्नसुखे रतिश्च।
ह्रन्नेत्रजिह्वाश्रवणोपदेहो घनाङ्गता केशनखातिवृद्धि:
शीतप्रियत्वं गलतालुशोषो माधुर्यमास्ये करपाददाह:
भविष्यतो मेहगदस्य रूपं मूत्रेऽभिधावन्ति पिपीलिकाश्च। (च०चि० ६/१४)

—दन्तादीनां मलाढ्यत्वं प्राग्रूपं पाणिपादयो:।
दाहाश्चिक्कणता देहे तृट् स्वाद्वास्यं च जायते।। (मा०नि० ३३/५)

—हस्तपाद तल दाह: ..... केशानां वृद्धिश्च च नखानां।। (सु०नि० ६/५)

- केशो का जटिल भाव होना
- मुख माधुर्य (मुख में मधुरता)
- हाथ व पैर में सुप्तता व दाह
- मुख तालु कण्ठ शोष
- पिपासा
- आलस्य
- शरीर में नेत्र, कर्ण, दन्त आदि के मलों की अधिकता (दन्तादीनां मलाढ्यत्वं)
- केशनखातिवृद्धि (केशों व नखों का तेजी से बढ़ना)
- सर्वाङ्गशून्यता (समस्त शरीर में सुन्नता)

- शरीरे विस्रगन्धता (शरीर से कच्ची मछली सम गन्ध आना)
- षट्पदपिपीलिकाभिश्च शरीरमूत्राभिसरणं (मूत्रेऽभिधावन्ति पिपीलिकाश्च) शरीर व मूत्र पर चींटियों का बैठना
- मूत्रे च मूत्रदोषान् (मूत्र में मूत्र के अन्य दोषों का आ जाना)
- सदा निद्रा तन्द्राग्रस्त रहना
- स्वेदोऽङ्गगन्धः (स्वेद और शरीर से गन्ध का आना)
- शिथिलाङ्गता
- सुखपूर्वक शय्या व आसन पर बैठने की इच्छा
- शीत प्रियता
- घनाङ्गता (शरीर का मोटा होना)
- स्निग्ध पिच्छिल गुरूता गात्राणां (अङ्गों में स्निग्धता, पिच्छिलता व गुरूता)
- मधुर शुक्लमूत्रता (मूत्र मधुर रस शुक्ल वर्ण होना)

८. रूप/लक्षण :

(अ) सामान्य रूप–

"सामान्यं लक्षणं तेषां प्रभूताविलमूत्रता।
दोष दूष्याविशेषेऽपि तत्संयोगविशेषतः।।
मूत्रवर्णादि भेदेन भेदो मेहेषु कल्प्यते।।" (अ०हृ०नि० १०/७–८)

"तत्राविलप्रभूतमूत्रलक्षणाः सर्वे एव प्रमेहाः।।" (सु०नि० ६/६)

अर्थात् प्रभूताविलमूत्रता–मूत्र की अधिकता व आविलता अर्थात् गंदलापन सभी प्रमेहो का सामान्य लक्षण है, सभी प्रमेहों में दोष व दूष्य के समान रहने पर भी उनके गुणों के संयोग विशेष के कारण मूत्र के गन्ध, वर्ण, स्पर्श आदि में विभिन्नता आ जाती है।

(ब) विशेष (विशिष्ट) लक्षण–

(१) सहज एवं कुलज प्रमेह

"तयोः पूर्वेणोपद्रुतः कृशो रूक्षोऽल्पाशी पिपासुर्भृशं परिसरणशीलश्च भवति।। " (सु०चि०११/३)

माता पिता के बीज दोष से उत्पन्न सहज प्रमेह में निम्न लक्षण पाये जाते हैं–

- कृशता
- रूक्षता
- अल्पाशी
- पिपासायुक्त
- परिसर्पण (घूमने फिरने वाला)
- दुर्बल (प्राय:)

(२) अपथ्य निमित्तज प्रमेह–

"उत्तरेण स्थूलो बह्वाशी स्निग्ध: शय्यासनस्वप्नशील: प्रायेणेति"

→अहित आहार जन्य प्रमेह में निम्न लक्षण प्राप्त हो सकते हैं।

- स्थूलता
- बह्वाशी (बहुत खाने वाला)
- स्निग्ध शरीर वाला
- शय्यासन (निरन्तर सुखपूर्वक बैठे रहने वाला)
- स्वप्नशील (अति निद्रा सेवन करने वाला)
- बलवान (प्राय:)

(३) दोष विशेष अनुसार २० प्रकार के प्रमेह व लक्षण

कफज प्रमेह

भेद	मूत्र का रस व गन्ध	मूत्र का गुण व लक्षण
१. उदक मेह	–	अच्छ, बहु (अति मात्रा), श्वेत, शीत, गन्ध रहित, उदक (जल) समान मूत्र त्याग
२. इक्षुबालिका	मधुर रस	अधिक मात्रा में मधुर, शीत, ईषत्

रस मेह		पिच्छिल, आविल व इक्षुरस समान मूत्रत्याग
३. सान्द्रमेह	—	पात्र में रखने पर कुछ देर बाद सान्द्री भवति (कुछ गाढ़ा हो जाता है)
४. सान्द्र प्रसाद	—	पात्र में रखने पर कुछ देर बाद कुछ गाढ़ा (नीचे) व कुछ स्वच्छ/निर्मल (ऊपर)
५. शुक्ल मेह	—	चावल के आटे के तुल्य श्वेत वर्ण का बार–बार मूत्रत्याग (शुक्ल पिष्ट निभं)
६. शुक्र मेह	—	शुक्र की तरह या शुक्र मिश्रित बार–बार मूत्र त्याग
७. शीत मेह	अत्यन्त मधुर रस	शीतल, अति मात्रा मूत्र त्याग
८. सिकता मेह	—	मूत्र में सिकता (बालू) समान मूर्त छोटे–छोटे टुकड़े आना
९. शनैमह	—	मन्दम वेग कृच्छता से धीरे–धीरे मूत्रत्याग
१०. आलाल मेह	—	तन्तुबद्धं चिपचिपा मूत्रत्याग
अन्य		
सुरा मेह	—	सुरा तुल्य, पात्र में (रखने पर) ऊपर निर्मल, नीचे गाढ़ा
पिष्ट मेह	—	श्वेत पिष्ट समान

पित्तज प्रमेह

भेद	**मूत्र का रस व गन्ध**	**मूत्र का गुण व लक्षण**
१. क्षारमेह	क्षारीय रस व गन्ध	स्पर्श में क्षारवत
२. काल मेह	—	स्याही/मसी के समान कालावर्ण व उष्ण गुण युक्त मूत्र
३. नील मेह	अम्ल मूत्र	चाषपक्षी के पंख के समान नीले वर्ण का अम्ल मूत्र त्याग
४. लोहित या रक्त मेह	लवण रस, विस्र गन्धी	उष्ण व रक्त वर्ण का मूत्र त्याग
५. माञ्जिष्ठ मेह	विस्र गन्धी	मञ्जिष्ठा क्वाथ के समान रक्त वर्ण का अधिक मूत्र त्याग

६. हारिद्र मेह	कटु रस	हल्दी के जल के समान पीत वर्ण मूत्र त्याग

वातज प्रमेह

भेद	मूत्र का रस व गन्ध	मूत्र का गुण व लक्षण
१. वसा मेह (वसा दूष्य)	—	वसा मिश्र, वसाभ मुहुर्मुहु: मेहति
२. मज्जमेह (मज्जादूष्य)	—	मज्जा सह मूत्र मुहुर्मुहु: त्याग (सुश्रुत अनुसार सर्पिमेह)
३. हस्ति मेह(लसीका दूष्य)	—	लगातार मत्त हाथी की तरह अधिक मूत्र का बार–बार त्याग
४. मधुमेह	मधुर रस, मधु समान कषाय रस	पाण्डु वर्ण, मधु समान रूक्ष मूत्र त्याग

➢ आचार्य सुश्रत मतानुसार

"स चापि गमनात् स्थानं स्थानादासनमिच्छति।
आसनाद् वृणुते शय्यां शयनात् स्वप्नमिच्छति।।" (सु०नि०६/२३)

अर्थात् मधुमेह रोगी चलने से अधिक खड़े रहना खड़े रहने से अधिक बैठना, बैठने से अधिक लेटना तथा लेटने पर निद्रा सेवन करने की इच्छा वाला होता है।

➢ आचार्य वाग्भट्ट व माधवकर मतानुसार

"मधुरं यच्च मेहेषु प्रायोमध्विव मेहति। सर्वेऽपि मधुमेहाख्या माधुर्याच्च तनोरत:।।"

अर्थात् मधुमेह रोगी मधु के समान मधुर मूत्र का त्याग करता है और शरीर में भी माधुर्य (मधुरता) रहती है।

→इस प्रकार से इन २० प्रमेह भेदों में केवल इक्षुमेह, शीतमेह व मधुमेह में ही मूत्र में मधुर रस का उल्लेख है। ये २० प्रकार के भौतिक मूत्र दोष युक्त प्रमेह मूत्र में पाये जाते हैं।

९. साध्यासाध्यता:

कफज प्रमेह की –साध्यता (साध्य)

ते दश प्रमेहा: साध्या: (च०नि० ४/११)

(१) **समानगुण मेद: स्थानकत्वात्** (समान गुण वाले मेद के आश्रय होने से)

(२) **कफस्य प्राधान्यात्** (कफ दोष की प्रधानता से)

(३) **समक्रियत्वाच्च** (दोष और दूष्यी की समान चिकित्सा होने से)

ज्वरे तुल्यर्तुदोषत्वं प्रमेहे तुल्य दूष्यता।
रक्तगुल्मे पुराणत्वं सुखसाध्यस्य लक्षणम्।। (मधुकोष)

→इस प्रकार प्रमेह में तुल्य दूष्यता का होना रोग के प्रभाव से सुख साध्य है।

पित्तज प्रमेह–याप्य

सर्व एव ते याप्या: (च०नि० ६/२७)

१. **संसृष्टदोषमेद: स्थानत्वात्।।** कफ और पित्त संसृष्ट दोषों का आश्रय मेद होने से

२. **विरूद्धोपक्रमत्वाच्चेति।।** दोष–दूष्य की चिकित्सा एक दूसरे के परस्पर विरूद्ध होने से

→व्याधि प्रभाव से भी पित्तज प्रमेह याप्य होता है।

वातज प्रमेह–असाध्य (च०नि० ६/३८)

(१) **महात्ययिकत्वात**–महाविनाशकारी होने से

(२) **विरूद्धोपक्रमत्वाच्चेति**–परस्पर विरूद्ध चिकित्सा होने से दोषदूष्य की

→(च०चि० ६/५२) पित्त या कफ वृद्ध होने पर वृद्धतर वात से उत्पन्न प्रमेह की चिकित्सा करनी चाहिए, किन्तु प्रमेह रोग में धातुओं के अत्यन्त क्षीण हो जाने पर वृद्ध वाय से उत्पन्न प्रमेह असाध्य ही है।

इनके अतिरिक्त

- प्रमेह पिड़िका से पीड़ित एवं उपद्रव युक्त मधुमेह असाध्य है। (सु०नि० ६/२४)
- गुल्म, मधुमेह व राजयक्ष्मा रोग पीड़ित रोगी के बल व मांस क्षीण होने पर असाध्य होते हैं। (च०इ० ९/८)
- तृष्णा दाह, पिड़िका, मांस कोथ व अतिसार पीड़ित प्रमेही अरिष्ट के कारण मृत्यु को प्राप्त होते हैं। (अ०ह०शा० ५/८५)

- सर्व प्रकार के प्रमेह, प्रारम्भ में चिकित्सा न करने से मधुमेह का रूप धारण कर असाध्य हो जाते है। (सु०नि०६/३०)
- पूर्वरूप के साथ कफज, पित्तज तथा क्रम से उत्पन्न वातज प्रमेह साध्य नहीं होते।
- पित्तज प्रमेह याप्य किन्तु मेद अधिक दुष्ट न हो तो साध्य होते हैं। (च०चि० ६/५३)
- सहज प्रमेह तथा मधुमेह– न साध्य उक्ता (असाध्य)

१०. उपद्रव :

→उपद्रवस्तु खलु प्रमेहिणां ..... तत्प्रसङ्गाद्भवन्ति। (च०नि० ४/४८)

तृष्णा, अतीसार, दाह, दौर्बल्य, अरोचक, अविपाक, पूति मांस पिड़का– अलजी विद्रधि आदि

→मक्षिकोपसर्पणमालस्यं ..... प्रमेहा: सोपद्रवाव्याख्याता:। (सु०नि० ६/१५)

१. श्लेष्मज प्रमेह उपद्रव

मक्षिकाओं का प्रमेही के शरीर व मूत्र पर बैठना, आलस्य, स्थूलता, प्रतिश्याय, अङ्गशैथिल्य अरूचि, अविपाक, कफस्राव, छर्दि, निद्रा, कास, श्वास आदि।

२. पित्तज प्रमेह उपद्रव

वृषण अवदारण, वस्तिभेद, मेढ्रतोद, हृदशूल, अम्लिका, ज्वर, अतीसार, अरोचक, वमथु, परिधूमायन, दाह, मूर्च्छा, पिपासा, निद्रानाश, पाण्डु रोग, मल मूत्र नेत्र का पीला होना

३. वातजन्य प्रमेह उपद्रव

हृदग्रह, लौल्य, अनिद्रा, स्तम्भ, कम्प, शूल, बद्ध पुरीष आदि।

प्रमेह पीड़िका

"उपेक्षयाऽस्य जायन्ते पिड़का सप्त दारूणा:
मांसलेष्ववकाशेषु मर्मस्वपि च सन्धिषु
शराविका कच्छपिका जालिनी सर्षपी तथा।
अलजी विनताख्या च विद्रधी चेतिसप्तमी।"(च०सू० १७/८२)

मधुमेह रोग की उपेक्षा करने से मांसल प्रदेश में मर्मस्थानों में एवं सन्धियों में कष्टदायक पिड़कायें उत्पन्न हो जाती है।

- सर्षपी, अलजी, विनता, विद्रधी– साध्य
- दुर्बलाग्नि, गुद, हृदय, शिर व मुख पीठ और मर्म स्थान में उपद्रव युक्त पिड़िका– असाध्य
- जो प्रमेह जिस दोष की प्रधानता को युक्त उससे उत्पन्न पिड़का भी उसी दोष की प्रधानता से युक्त होती है।
- **चिकित्सा**–प्रमेह पिड़का की रक्तमोक्षण व शस्त्र द्वारा व्रणवत (संशोधन व रोपण) चिकित्सा करें।(च०चि० ६/५८)

११. चिकित्सा सूत्र :

"स्थूलः प्रमेही बलवानिहैकः कृशस्तथैकः परिदुर्बलश्च
संवृंहणं तत्र कृशस्य काय संशोधनं दोषबलाधिकस्य।।" (च०चि० ६/१५)

मधुमेह (प्रमेह) रोगी की चिकित्सा से पूर्व रोग एवं रोगी की पूर्ण परीक्षा करनी चाहिए।

मधुमेह रोगी

सन्तर्पणोत्थ या अपथ्य निमित्तज	अपतर्पणोत्थ या सहज
↓	↓
स्थूल व बलवान रोगी	कृश व दुर्बल रोगी
↓	↓
दोषाधिक्य व बलाधिक्य में संशोधन चिकित्सा	बृंहण (सन्तर्पण) चिकित्सा
→अपतर्पण चिकित्सा	→संशमन चिकित्सा
→(अर्थात स्थूल तथा बलवान प्रमेही में सर्वप्रथम स्नेहन पूर्वक संशोधन कराकर तदुपरान्त यथावश्यकतानुसार सन्तर्पण कराकर संशमन चिकित्सा करनी चाहिए)	→(अर्थात कृश प्रमेही में सर्व प्रथम सन्तर्पण द्वारा बृंहण करने उपयुक्त संशमन चिकित्सा देनी चाहिए, इसमें संशोधन निषिद्ध है।)

आचार्य सुश्रुत अनुसार

"तत्र कृशमन्नपानप्रतिसंस्कृताभि: क्रियाभिश्चिकित्सेत् स्थूलमपतर्पणयुक्ताभि:।। (सु०चि० ११/४)

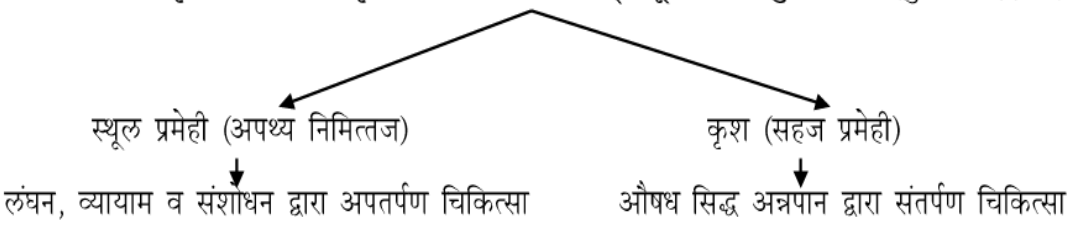

१२. चिकित्सा क्रम :

(१) निदान परिवर्जन

"यैर्हेतुभिर्ये प्रभवन्ति मेहास्तेषु प्रमेहेषु न ते निषेव्या:।
हेतोरसेवा विहिता यथैव जातस्य रोगस्य भवेच्चिकित्सा।।" (च०चि०६/५३)

जिन कारणों से जो प्रमेह उत्पन्न होते हैं उन उन कारणों का सेवन नहीं करना चाहिए। क्योंकि कारण की असेवा अर्थात् त्याग से ही उत्पन्न रोगों की चिकित्सा होती है।

(२) संशोधन कर्म

स्थूल व बलवान (दोष बलाधिक) मधुमेही में सर्वप्रथ संशोधन करवाना चाहिए। इस हेतु

"स्निग्धस्य योगा विविधा: प्रयोज्या ..... कार्यम्।।" (च०चि० ६/१६)

(अ)–स्नेहन–(वाह्य तथा आभ्यान्तर स्नेहन द्वारा शरीर के स्निग्ध हो जाने पर)

(ब)–संशोधन–(मल शुद्धि के लिए बताए गए वमन योग (कफ दोष हेतु) व विरेचन योग (पित्त दोष हेतु) प्रयोग करना चाहिए।

संशोधन के पश्चात् रोगी का अग्निबल देखकर संतर्पण कारक अन्नपान देना चाहिए।

आचार्य सुश्रुत के अनुसार प्रमेह रोगी को उपयुक्त घृत/तैल आदि से स्नेहन कराकर तीक्ष्ण वमन या विरेचन देना चाहिए। तत्पश्चात् आस्थापन वस्ति देनी चाहिए। (सु०चि० ११/७)

"दुर्विरेच्या हि मधुमेहिनो भवन्ति मेदोऽभिव्याप्त शरीरत्वात् तस्मात् तीक्ष्णमेतेषां शोधनं कुर्वीत।"

(सु०चि० १२/६) अर्थात् शरीर में मेद की अधिकता के कारण मधुमेह रोगी दुर्विरेच्य होते हैं (कठिनता से विरेचन होता है) इसीलिए उन्हें तीक्ष्ण विरेचन देना चाहिए।

इस प्रकार संशोधन से दोष बलाधिक्य मधुमेही के वृद्ध दोष शरीर से बाहर निकलकर रोग का शान्त करते हैं।

३. संशमन कर्म

दुर्बल और कृश प्रमेह से पीड़ित रोगी संशोधन योग्य नहीं होता, अत: उसमें संशमन चिकित्सा करनी चाहिए इस हेतु–

- "संशोधन नहिति य: .....
  मन्था: कषाया .....
  ये विष्किरा..... चाप्यपूपान्।।" (च०चि० ६/१८–१९)
- मुदगादियूषैरथ ..... यव प्रधानस्तु भवेत प्रमेही
  येवष्य भक्ष्यान् ..... मधुसंप्रयुक्तान।। (च०चि०६/२०)
- मन्थ, कषाय, यवचूर्ण, लेह व लघु आहार प्रयोग करें।
- मांस सात्म्य हो तो विष्किर व प्रतुद पक्षियों का मांसरस तथा जाङ्गल पशु मांसरस के साथ यव का भात, सक्तू आदि का प्रयोग
- मुद्गयूष, तिक्त शाक व पुराना शालि भात
- तृणधान्य जैसे सांवा, कंगुनी व विशेषरूप से यव से बने अनेक भक्ष्य पदार्थों में मधु मिलाकर सेवन करायें।
- कफ प्रमेही में विशेषरूप से यव प्रधान भोजन दें।

पुनश्च स्थूल बलवान् प्रमेही को भी संशोधन व आवश्यकतानुसार सन्तर्पण कराने के पश्चात् संशमन कर्म द्वारा चिकित्सा करनी चाहिए।

४. सन्तर्पण कर्म

"स्निग्धस्य..... मेहेषु संतर्पणमेव कार्यम्।
गुल्म: क्षयो .....
प्रमेहिण: स्यु: परितर्पणानि कार्याणि तस्य प्रसमीक्ष्य वह्निम्।।" (च०चि० ६/११–१५)
स्थूल व बलवान प्रमेही को सर्वप्रथम संशोधन कराने के पश्चात् –

- रोगी के अग्निबल का विचार करते हुए संतर्पण कारक अन्नपान का ही प्रयोग करना चाहिए।
- यदि संशोधन पश्चात् अपतर्पण कर्म प्रयोग किया जाता है तो वृद्ध वायु, गुल्म, धातुक्षय, लिङ्ग और वस्ति में वेदना व मूत्रग्रह करता है।

- इस हेतु विभिन्न कफनाशक क्वाथ साधित यव से बने सत्तू आदि में मधु व सीधू अथवा गुड़ आदि मिलाकर सेवन करना चाहिए।
- कृश व दुर्बल रोगी के लिए बृंहण (सन्तर्पण) कर्म द्वारा चिकित्सा करनी चाहिए।

"संवृंहणं तत्रकृशस्य कायं .....।।" (च०चि० ६/१५)

"तत्र कृशमन्नपानप्रतिसंस्कृताभि: .....।।" (सु०चि० ११/४)

→अपतर्पण कर्म

"क्लेदश्च मेदश्च कफश्च .....
.....मेहेषु कार्याण्यपतर्पणानि।।" (च०चि० ६/५७)

वृद्ध क्लेद, मेद व कफ से उत्पन्न प्रमेही में कफ व पित्तजन्य प्रमेह में अपतर्पी कराना चाहिए।

५. व्यायाम आदि कर्म

"व्यायामयोगैर्विविधै: प्रगाढ़ैरूद्वर्तनै: स्नानजलावसेकै:।
सेव्यत्वगेलागुरूचन्दनाद्यैर्विलेपनैश्चाशु न सन्ति मेहा:।।" (च०चि० ६/५०)

"प्रवृद्धमेहास्तु व्यायामनियुद्धक्रीड़ागजतुरगरथ।
पदातिचर्यापरिक्रमणान्यस्त्रोपास्त्रे वा सेवरेन।।" (सु०चि० ११/११)

विविध प्रकार के व्यायाम, बलपूर्वक प्रगाढ़ उद्वर्तन, विजयसार या खदिरसार आदि के जल से अवगाह–स्नान, परिषेक आदि, अगुरू चन्दनादि का लेप, व्यायाम, कुश्ती (नियुद्ध), क्रीड़ा, हाथी घोड़े आदि की सवारी, रथचर्या पदातिचर्या, भ्रमण, अस्त्र एवं उपास्त्र का अभ्यास करने से प्रमेह रोग नष्ट होता है।

योगासन–कूर्मासान, मयूरासन, पश्चिमोत्तानासन सूर्यनमस्कार आदि

प्राणायाम भस्त्रिका आदि

औषधीय प्रयोग :

(१) कफज प्रमेह नाशक योग

आचार्य चरक–कफज प्रमेह नाशक १० योग

१. हरीतकी, कट्फल, मुस्तक, लोध्र

२. पाठा, विडंग, अर्जुनत्वक, धन्वनत्वक

३. हरिद्रा, दारूहरिद्रा, तगर, विडंग

४. कदम्ब, शाल अर्जुन, यवानी

५. दारूहरिद्रा, विडंग, खदिर, धव

६. देवदारू, कुष्ठ, अगुरू, चन्दन

७. दारूहरिद्रा, अग्निमन्थ, हरीतकी, विभीतक, आमलकी, पाठा

८. पाठा, मूर्वा, स्वदंष्ट्रा (गोक्षुर)

९. यवानी, उशीर, हरीतकी, गुडुची

१०.चव्य, अभया, चित्रक, सप्तपर्ण

आचार्य सुश्रुत

(१) उदक मेह–परिजात कषाय

(२) इक्षुमेह–निम्ब कषाय

(३) सान्द्र मेह–सप्तपर्ण कषाय

(४) सुरा मेह–शाल्मली कषाय

(५) पिष्टमेह–द्विहरिद्रा कषाय

(६) शुक्रमेह–दूर्वा, शैवल, प्लव, करञ्ज व कसेरू कषाय अथवा अर्जुन चन्दन कषाय

(७) सिकता मेह–निम्ब कषाय

(८) शीत मेह–पाठा गोक्षुर कषाय

(९) शनैर्मेह–त्रिफला गुडुची कषाय

(१०) लालामेह–त्रिफला आरग्वध कषाय

(२) पैत्तिक प्रमेह नाशक योग–

आचार्य चरक

(१) उशीर, लोध्र, अर्जुन, चन्दन

(२) उशीर, मुस्ता, आमलकी, अभया

(३) पटोल, निम्ब, आमलक, अमृता

(४) मुस्ता, अभया, पद्मक, वृक्षक

(५) लोध्र, अम्बु, कालीयक, धातकी

(६) निम्ब, अर्जुन, आम्रातक, हरिद्रा, नीलोत्पल

(७) शिरीष, सर्ज, अर्जुन, केशर

(८) प्रियङ्गु, पद्म, नीलोत्पल, किंशुक

(९) अश्वत्थ, पाठा, असन, वेतस

(१०) कंटकारी, उत्पल, मुस्ता

आचार्य सुश्रुत

(१) माञ्जिष्ठ मेह–माञ्जिष्ठ चन्दन कषाय

(२) हारिद्र मेह–राजवृक्ष कषाय

(३) नील मेह–सालसारादि गण, अश्वत्थ कषाय

(४) क्षार मेह–त्रिफला कषाय

(५) काल मेह– न्यग्रोधादि कषाय

(६) शोणित मेह–गुडुची, तिन्दुकास्थि, काश्मरी व खर्जुर कषाय

(३) वातज प्रमेह नाशक योग

- वातज प्रमेह असाध्य, किन्तु यहाँ वातोल्वण प्रमेह की चिकित्सा बताई गई है।
- पित्त, कफ वृद्ध एवं वात वृद्धतर होने पर चिकित्सा करें, किन्तु धातुओं के अत्यन्त क्षीण होने पर वृद्ध वातजन्य प्रमेह असाध्य है। (च०चि० ६/५२)

"सिद्धानि तैलानि घृतानि ..... वायु: शममेति तेषाम्।" (च०चि० ६/२४)

"दृष्टवानुबन्धं पवनात कफस्य पित्तस्य वा स्नेहर्विधिविकल्प्य:।
तैलं कफे स्यात् स्वकषाय सिद्धं पित्ते घृतं पित्तहरै: कषायै:।।"(च०चि० ६/३७)

- वातज प्रमेह में कफानुबन्ध होने –कफनाशक कषाय योगों से सिद्धतैल
- वातज प्रमेह में पित्तानुबन्ध होने पर–पित्तनाशक कषाय योगों से सिद्ध घृत का प्रयोग कर चिकित्सा करनी चाहिए।

यथा त्रिकण्टकाद्य तैल व घृत आदि।

यह तैल घृत–वातज प्रमेह के दूष्य मेद और (कफ या पित्त) को शान्त व रूक्ष वात को भी शान्त करता है।

(४) सर्व प्रमेह नाशक योग

आचार्य चरक

फलत्रिकादि क्वाथ

लोध्रासव या मध्वासव (कफ व पित्त जन्य प्रमेह) रोगाधिकार

दन्त्यासव (कफ व पित्त जन्य प्रमेह)

भल्लातकासव(कफ व पित्त जन्य प्रमेह)

आचार्य सुश्रुत

(सु०चि० ११/८)

हल्दी व मधु मिश्रित आँवले का स्वरस

त्रिफला, इन्द्रायण, देवदारू, नागरमोथा क्वाथ

शाल, कबीला, मुष्क कल्क + हल्दी + मधु + आमलकी स्वरस

कुटज, कैथ, रोहितक, विभीतक, सप्तपर्ण पुष्प कल्क + आमलकी स्वरस

नीम, अमलतास, सप्तपर्ण, मूर्वा, कुटज, सोमवृक्ष, पलाश पत्र/त्वक/मूल/पुष्प + मधु + आमलकी स्वरस

(सु०चि०१२)– धान्वन्तर घृत, शालसारादि लेह, नवायसलौह, लोहारिष्ट

(सु०चि० १३) मधुमेह चिकित्सा–

शिलाजतु कल्प

स्वर्णमाक्षिक व रजतमाक्षिक का पान

तुवरक कल्प

योग रत्नाकर–(योग रत्नाकर प्रमेह निदान चिकित्सा प्रकरण)

फलत्रिकादि क्वाथ, विडंगादि क्वाथ	न्यग्रोधादि चूर्ण
पलाशपुष्प क्वाथ	कर्कटी बीजादि चूर्ण
भूधात्र्यादि योग	गोक्षुरादि वटी
कतकबीज योग	चन्द्रप्रभा वटी
त्रिफलादि क्वाद (वृन्दोक्त)	पूगपाक
गुडुच्यादि क्वाथ (वृन्दोक्त)	अश्वगन्धापाक
आकुल्यादि योग	द्राक्षापाक
निशा–त्रिफला योग	सिंहामृत घृत
त्रिफला कल्क	हरिद्रादि तैल, महानिम्ब प्रयोग
सालमुस्त योग	उदुम्बर बाकुची लेप (प्रमेह पिड़िका हेतु)
त्रिफला चूर्ण	

रस (योग रत्नाकर)

हरिशंकर रस	अभ्रक भस्म प्रयोग
मेघनाथ रस	नाग भस्म
मेह कुञ्ज केशरी रस	गन्धक योग
मेहान्तक रस	शिलाजतु योग
मेहारि रस	स्वर्ण माक्षिक भस्म योग
चन्द्रकला वटी	वसन्त कुसुमाकर रस
वंगेश्वर रस	जलजामृत रस
महावंगेश्वर रस	तारकेश्वर रस (बहुमूत्र)
वंग भस्म प्रयोग	आनन्द भैरव वटी (बहुमूत्र मेह)

चक्रदत्त (चक्रपाणि) (प्रमेहाधिकार अध्याय ३४)

लोध्रादि चत्वार: कषाय	धान्वन्तर घृत
छिन्नाद्यन्ये क्वाथ	शिलाजतु योग

दारूहरिद्रादि क्वाथ	विडंगादि लौह
न्यग्रोधादि चूर्ण	माक्षिकाद्यन्ये प्रयोग

वंगसेन संहिता (प्रमेह रोगाधिकार–अध्याय १७)

न्यग्रोधादि चूर्ण	गोक्षुराद्यवलेह
दाड़िमाद्य घृत	सारावलेह
गोक्षुरादि चूर्ण–वटिका	असनादि योग
अर्जुनाद्य घृत–तेल	

भैषज्य रत्नावली (गोविन्द दास सेन) (प्रमेह रोगाधिकार–३७)

गुडुचीसत्व प्रयोग	रस
शतावरी स्वरस	बङ्गावलेह
स्फटिका चूर्ण	मेह कालानलरस
मुस्तादि क्वाथ	पञ्चाननरस चन्द्रकला वटी
विडंगादि क्वाथ	मेहमुद्गर वटी
दूर्वादि क्वाथ	शुक्रमातृका वटी
सर्जादि क्वाथ	प्रमेह कुलान्तक रस
लोहित चन्दनादि क्षीर	वेद विद्यावटी
कुशावलेह	
शालसारादि लेह,	

वङ्गाष्टक रस	कामचूड़ामणि रस
मेहवज्र रस	वङ्गेश्वर रस

चन्द्रप्रभा वटी	स्वर्ण वङ्ग
योगेश्वर रस	सर्वेश्वर रस
वसन्ततिलक रस	अपूर्व मालिनी वसन्त रस
विद्यावङ्गेश्वर रस	प्रमेह चिन्तामणि रस
प्रमेह सेतु रस	वृहत् सोमनाथ रस
मेहकुञ्ज केशरी रस	शाल्मली घृत, धान्वन्तर घृत
मेहान्तक रस	प्रमेह मिहिर तैल

रसेन्द्र सार संग्रह (गोपाल कृष्ण) प्रमेह चिकित्सा

हरिशंकर रस मेघनाद रस	वृहद्धरिशंकर रस मेहवज्र
इन्द्रवटी चन्द्रप्रभा वटी	आनन्द भैरव रस कुमारिका योग
वङ्गवलेह वङ्गेश्वरो रस	विद्यावागीशो रस मेहकेशरी
प्रमेह सेतु रस वृहद्वङ्गेश्वर रस	योगेश्वर रस
विडंगादि लौह कस्तूरी मोदक	

१४. पथ्यापथ्य :

पथ्य–

"श्यामाक कोद्रवोद्यालगोधूमचणकाढ़की
शालिमुद्गकुलित्थाश्च मेहिनां देहिनां हिता:
मेदोघ्ना बद्धमूत्राश्च समा: सर्वेषु धातुषु
यवास्तस्मात्प्रशस्यन्ते मेहेषु च विशेषत:।" (यो०र० प्रमेह चि०)

आहार	थ्वहार
यव प्रधानस्तु भवेत्प्रमेही	व्यायाम
यव, मूंग, श्यामाक	नियुद्ध क्रीड़ा

कोद्रव, गोधूम चणक, कुलत्थ तिक्तशाक, आढ़की जाङ्गल मांस, मेदशून्यमांस शालि–षष्ठिक धान्य दन्ती, इंगुदी, सरसो व तीसी का तेल	पदातिचर्या, भ्रमण रूक्ष उद्वर्तन स्नान अभ्यङ्ग परिषेक टवगाह

अपथ्य

"सदाऽऽसनं दिवानिद्रा नवान्नानि दधीनि च।
मूत्रवेगधूमपानं स्वेद शोणितमोक्षणम्।।
सौवीरक सुरां सूक्तं तैलं क्षारं घृतं गुड़म्
अम्लेक्षुरस पिष्टान्नसूपमांसानि वर्जयेत्।।" (यो०र० प्रमेह चि०)

आहार	**थ्वहार**
सौवीरक, तुषोदक, शुक्त	दिवास्वाप,
मैरेय, सुरा, आसव,	अति मैथुन
जल, दूध, तेल, घृत	स्वेदन
इक्षुविकार, दही	धूम्रपान,
पिष्टान्न	मूत्रवेग धारण आदि
अम्ल यवागू–पानक	सदा आसन
ग्राम्य औदक आनूप मांस	रक्त मोक्षण
नवान्न	

१५. प्रमेह निवृत्ति के लक्षण :

जिस समय प्रमेह ग्रस्त रोगी का मूत्र पिच्छिलता रहित, स्वच्छ, रूक्ष, तिक्त और कटु हो जाए तो उसे प्रमेह रोग मुक्त समझ लेना चाहिए।

CONCLUSION

Detailed description of Madhumeha as done in this study shows that with proper understanding of etiological factors for diabetes with its types premonitory signs and predominant sign and symptoms one can understand better perspective of pathogenesis of this disease. Further on following proper line of treatment as per the prakriti of patient and dashvidha pariksha one can not only improve the life style and quality standard of living of Diabetic patient but also can come over drug dependency and prevent various debiliating complications of this disease.

REFERENCES

१. चरक संहिता (श्रीमद अग्निवेश प्रणीता, चरक दृढ़बल प्रतिसंस्कृता) सविमर्श 'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्या व्याख्याकार पं० काशीनाथ पाण्डेय, डॉ० गोरखनाथ चतुर्वेदी चौखम्भा भारती अकादमी पुनर्मुद्रित संस्करण सन् २००९ सूत्रस्थान १७, निदानस्थन–४, चिकित्सा स्थान ६

२. सुश्रुत संहिता (महर्षिणा सुश्रुतेन विरचिता) 'आयुर्वेदतत्त्वसन्दीपिका' हिन्दी व्याख्या–वैज्ञानिक विमर्श सहित व्याख्याकार डॉ० अम्बिकादत्त शास्त्री चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी। पुनर्मुद्रण सन् २०१०, निदान स्थान–६, चिकित्सा स्थान–११, १२ व १३

३. अष्टाङ्ग हृदय श्रीमद् वाग्भटाचार्यकृत, हिन्दी व्याख्या द्वारा डॉ० रविदत्त त्रिपाठी, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, पुनर्मुद्रित संस्करण २००६ चौखम्भा सुभारती प्रकाशन, वाराणसी।

४. माधव निदान महामति श्री माधवकरविरचित, 'मधुकोश' व्याख्या विभूषित (श्रीविजयरक्षित–श्रीकठदत्तविरचित) हिन्दी व्याख्या श्री यदुनन्दनोपाध्याय, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी पुनर्मुद्रित सन् २०१०, निदान ३३

५. कायचिकित्सा (द्वितीय खण्ड)–प्रो० रामहर्ष सिंह चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, पुनर्मुद्रित संस्करण २०१३ अध्याय ४८ प्रमेह एवं मधुमेह

६. काय चिकित्सा (द्वितीय भाग)–प्रो० अजय कुमार शर्मा चौखम्भा ओरियण्टलिया, चौखम्भ पब्लिशर्स, संस्करण २०११ अध्याय ६२–मधुमेह (प्रमेह) चिकित्सा

1. Harrison's Principles of Internal Medicine, Vol.2, 15th Edition Edited by Braunwald, Fauci, Kasper, Hauser, Longo, Jameson International Edition, McGraw Hill Medical Publishing Division (USA) ALVIN C. Powers-Diabetes Mellitus, 2001; 2109- 2137.
2. Davidson's Principles & Practice of Medicine 20th Edition, Edited by Nicholas A. Boon, Nicki R. College Brian R. Walker International Editor-John A.A. Hunter Churchill Living Stone (Elsevier), USA D.M. Frier, M. Fisher-Diabetes Mellitus PG., 2006; 805-848.